सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार
प्रेस विज्ञप्ति

संख्या– 832
18/07/2010

आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम छात्र चन्द्रगुप्त राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय से निकलें :– जस्टिस सिरपुरकर
बिहार के नौजवानों की मेधा राष्ट्रीय औसत से ज्यादा :– मुख्यमंत्री

पटना, 18 जुलाई 2010 :– चाणक्य विधि विश्वविद्यालय के नवनिर्मित परिसर और भवनों के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुये जहाॅ सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति वी0एस0 सिरपुरकर ने इस विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों और शिक्षकों का आह्वान किया है कि वे पठन–पाठन का ऐसा स्तर रखें कि यहाॅ से निकलने वाले छात्र आने वाले समय में लिगल प्रोफेशन की तमाम चुनौतियों का कामयाबी से मुकाबला करने में सक्षम हों; वहीं बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने कहा है कि कई मामलों में बिहार पिछड़ा हो सकता है पर मेधा और बुद्धि के मामले में हमारे नौजवान राष्ट्रीय औसत से ऊपर हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में समारोह को संबोधित करते हुये न्यायमूर्ति वी0एस0 सिरपुरकर ने कहा कि बिहार ने दुनिया को ज्ञान का प्रकाश दिया है। उन्होंने इस विश्वविद्यालय के नामकरण की सार्थकता को रेखांकित करते हुये कहा कि न्याय आधारित शासन के प्रणेता के रूप में चाणक्य तो याद किये जायेंगे ही, उनका सबसे बड़ा योगदान है– शिक्षक को सम्मान दिलाना।

न्यायमूर्ति वी0एस0 सिरपुरकर ने कहा कि विधि की शिक्षा प्राप्त कर लोग तत्काल लिगल प्रोफेशन में आकर पैसे अर्जित करने लगते हैं और इसके लिये स्तरीय शिक्षकों की बड़ी कमी महसूस की जाती है। 1920 के दशक में कानून का पाठयक्रम दो वर्षों का था, फिर इसे तीन वर्षों का बना दिया गया और अब यह कोर्स पाॅच वर्ष का हो गया है। उन्होंने कहा कि कई बार अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों की बारीकियों के मद्देनजर देशहित में उसका प्रारूप तैयार करने वाले विशेषज्ञों की कमी भी महसूस की गई है। उन्होंने विधि के छात्रों का आह्वान किया कि वे पढ़ाई के बाद पैसे जरूर अर्जित करें, पर देश की मिट्टी से जुड़े यहाॅ के मजदूरों, किसानों, आमलोगों के हित में उन्हें जरूरी मदद दिलाने, उनके हक दिलाने में भी आगे आयें। उन्होंने सुझाव दिया कि राज्य विधिक सहायता प्राधिकार के साथ जुड़कर यहाॅ के छात्र गंदी बस्तियों और ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लोगों को उनके अधिकार दिलाने में मदद करें।

न्यायमूर्ति वी0एस0 सिरपुरकर ने प्राचीन भारतीय संस्कृति में न्याय और धर्म की महत्ता का उल्लेख करते हुये कहा कि महाभारत काल में गांधारी ने अपने पुत्र दुर्योधन को भी 'यतो धर्मस्ततो जयः' कहा, न कि आशीर्वाद के रूप में पुत्र मोहवश 'विजयी भवः' कहा। उन्होंने बाबा आमटे की कविता के भाव उद्धृत करते हुये चाणक्य विधि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 डाॅ0 ए0 लक्ष्मीनाथ तथा बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के सत्प्रयासों, समर्पण तथा विलक्षण पारपरिक सहयोग के लिये उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुये विश्वास व्यक्त किया कि यह विश्वविद्यालय न सिर्फ बिहार बल्कि देश के लिये गौरवपूर्ण शिक्षण संस्थान बनेगा और यहाॅ आज पढ़ रहे छात्र भविष्य में देश और दुनिया में अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेंगे।

इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुये मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने पहली बार बिहार आये सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति वी0एस0 सिरपुरकर का स्वागत करते हुये कहा कि आज से करीब चार वर्ष पूर्व 15 अगस्त 2006 को चाणक्य विधि विश्वविद्यालय का संचालन ए0एन0 सिन्हा इन्स्टीच्यूट से प्रारंभ किया गया था और दो वर्ष पूर्व इसके अपने परिसर के निर्माण का शिलान्यास इस स्थान पर किया गया था। दो वर्ष में ही इस भवन के निर्माण का कार्य इतना पूरा हो

गया है कि आगामी 1 अगस्त से इस विश्वविद्यालय के पठन–पाठन का कार्य अपने नये परिसर में प्रारंभ होने जा रहा है। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों को बधाई देते हुये निरंतर तरक्की की शुभकामनायें दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस इलाके में करीब सौ एकड़ जमीन में चाणक्य विधि विश्वविद्यालय के अलावा चन्द्रगुप्त इन्स्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट, निफ्ट तथा इग्नू के रिजनल सेन्टर की स्थापना की जा रही है। उन्होंने इन सभी शिक्षण संस्थानों की इमारतों को अत्यंत भव्य बनाये जाने का निर्देश समारोह में उपस्थित मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह को दिया।

मुख्यमंत्री ने चाणक्य विधि विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर इसके संचालन में कुलपति प्रो0 डॉ0 ए0 लक्ष्मीनाथ द्वारा ली जा रही गहरी दिलचस्पी के लिये उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुये कहा कि वे यहॉ के पठन–पाठन का स्तर सर्वोत्कृष्ट बनाये रखने की समुचित योजना और तैयारी रखें, इसके लिये समय पर पर्याप्त निधि राज्य सरकार उपलब्ध करायेगी। उन्होंने सुझाव दिया कि यहॉ के नियमित शिक्षण कार्यों के अतिरिक्त अपना सामाजिक दायित्व समझकर, यहॉ के छात्रों के लिये ऐसी कोचिंग की व्यवस्था करें, जिससे राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं के लिये यहॉ के छात्र बेहतर तैयारी कर सकें।

मुख्यमंत्री ने बिहार के गौरवशाली अतीत की चर्चा करते हुये कहा कि दुनिया का पहला व्यवस्थित विश्वविद्यालय नालंदा में था और जब इसका अवसान हो रहा था, तब पश्चिम में ऑक्सफोर्ड की स्थापना हो रही थी। उन्होंने कहा कि फिर से नालंदा अर्न्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना का काम काफी आगे बढ़ चला है। इसमें 17 देशों की सहभागिता है और प्रो0 अमर्त्य सेन की अध्यक्षता में मेन्टर ग्रुप बना है। इससे संबंधित प्रस्ताव पर केन्द्रीय मंत्रिमंडल से मिली मंजूरी के बाद इसे संसद के आगामी सत्र में लाया जायेगा और बिहार सरकार ने भी इससे संबंधित अपने राज्य कानून के निरसन और भूमि आदि परिसंपतियों को केन्द्र को हस्तांतरित करने का निर्णय लिया है।

मुख्यमंत्री ने दुनिया भर में विभिन्न स्तरों पर महसूस किये जा रहे प्रदेश के बदलाव की ओर संकेत करते हुये कहा कि सभी के प्रयास से हम फिर अपने गौरवपूर्ण स्थान को प्राप्त करेंगे तथा एक बार फिर बिहार दुनिया की अग्रणी पंक्ति में होगा। उन्होंने न्यायमूर्ति वी0एस0 सिरपुरकर से बार–बार बिहार आते रहने का अनुरोध करते हुये विश्वास व्यक्त किया कि उनके आगमन से बिहार और बिहार के लोगों को लाभ होगा।

पटना उच्च न्यायालय की मुख्य न्यायाधीश और चाणक्य विधि विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती रेखा एम0 दोषित ने अपने अध्यक्षयीय भाषण में बिहार को सभ्यताओं और शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बताते हुये विश्वास व्यक्त किया कि इस विश्वविद्यालय से भी निकलने वाले छात्र देश और दुनिया में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेंगे।

इस अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री श्री हरिनारायण सिंह, पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश तथा बिहार राज्य विधिक सहायता प्राधिकार के कार्यकारी अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री शिवकीर्ति सिंह तथा महाधिवक्ता श्री पी0के0 शाही ने भी समारोह को संबोधित किया।

इस अवसर पर चाणक्य विधि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 डॉ0 ए0 लक्ष्मीनाथ ने स्वागत करते हुये राज्य सरकार के अप्रत्याशित सहयोग तथा विश्वविद्यालय में चलाये जा रहे विभिन्न पाठयक्रमों की संक्षिप्त चर्चा की और विश्वास दिलाया कि यहॉ के पठन–पाठन का स्तर मानक एवं अनुकरणीय होगा।

******